शोध मंथन Vol. XVII No.1 Jan.- Mar. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.01

श्री सत्य साईं के मूल्य परक शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 05.01.26
स्वीकृतः 03.03.26

01

डॉ. मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्री जय नारायण मिश्र पी.जी. कॉलेज, लखनऊ
ईमेलः *drmanijoshi9@gmail.com*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। श्री सत्य साईं ने शिक्षा को केवल ज्ञान या सूचना अर्जन की प्रक्रिया न मानकर उसे मानव निर्माण, चरित्र विकास तथा नैतिक उत्थान का सशक्त माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य में अंतर्निहित दिव्य गुणों को विकसित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समग्र, मूल्य–आधारित, लचीली और बहुविषयक बनाने का प्रयास करती है। नीति में नैतिक मूल्यों, संवैधानिक आदर्शों, भारतीय ज्ञान परंपरा, जीवन कौशल, सेवा–भाव तथा सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया गया है। इस संदर्भ में श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के साथ गहरा सामंजस्य रखते हैं।

श्री सत्य साईं की शिक्षा–दृष्टि शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख बनाने के स्थान पर मानवीय और समाजोपयोगी बनाने पर बल देती है। शिक्षक को उन्होंने आदर्श चरित्र का प्रतीक, मार्गदर्शक एवं राष्ट्र–निर्माता माना, जो नीति में प्रतिपादित शिक्षक की भूमिका से मेल खाता है। साथ ही, सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व और आध्यात्मिक चेतना को शिक्षा से जोड़ने की उनकी अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुभवात्मक और समग्र अधिगम के सिद्धांतों को सुदृढ़ करती है। श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक सशक्त नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं तथा भारतीय शिक्षा को मानव–मूल्य केंद्रित दिशा देने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्द

श्री सत्य साईं, शैक्षिक विचार, मानव–मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समग्र विकास

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला होती है। यह न केवल ज्ञान, कौशल और बौद्धिक क्षमताओं का विकास करती है, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी आकार देती है। भारतीय शिक्षा परंपरा में शिक्षा को सदैव जीवन–निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखा गया है, जहाँ व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास एक समन्वित लक्ष्य रहा है। वेदों, उपनिषदों और गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' के सिद्धांत के अनुरूप आत्मोन्नति और सामाजिक कल्याण से जुड़ा हुआ था।

अनेक शिक्षाविदों, दार्शनिकों और आध्यात्मिक चिंतकों ने शिक्षा को पुनः मानवीय और मूल्य–आधारित बनाने पर बल दिया। श्री सत्य साईं (1926–2011) का शैक्षिक दर्शन इसी वैचारिक प्रवाह की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने शिक्षा को केवल डिग्री या आजीविका प्राप्त करने का साधन न मानकर 'मानव निर्माण' की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य के भीतर निहित सत्य, प्रेम, धर्म, शांति और अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मानव मूल्यों को जागृत करे।

श्री सत्य साईं के अनुसार यदि शिक्षा चरित्र से रहित होगी, तो वह समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। उनके विचारों में शिक्षा और सेवा के बीच गहरा संबंध है। उन्होंने शिक्षा संस्थानों को सेवा, अनुशासन और नैतिकता के केंद्र के रूप में विकसित करने का आह्वान किया। उनके द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थान इस दर्शन का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ मूल्य–आधारित शिक्षा, निःशुल्क अध्ययन और सेवा–भाव को प्राथमिकता दी जाती है।

इक्कीसवीं शताब्दी के बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिदृश्य में भारत को ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता थी, जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रख सके। इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया गया। यह नीति भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक संरचनात्मक और दार्शनिक सुधारों का प्रस्ताव करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख उद्देश्य समग्र और सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करना, शिक्षा को मूल्य–आधारित बनाना, तथा छात्रों में नैतिकता, संवैधानिक मूल्य, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल, योग, ध्यान, भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षक की भूमिका को केवल ज्ञान–प्रदाता तक सीमित न रखकर उसे मार्गदर्शक, प्रेरक और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में देखा गया है। यह दृष्टिकोण श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचारों से गहराई से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

इस संदर्भ में श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन न केवल दोनों दृष्टिकोणों के बीच वैचारिक साम्य और अंतर्संबंधों को उजागर करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि श्री सत्य साईं का शिक्षा–दर्शन नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु एक सुदृढ़ नैतिक और दार्शनिक आधार प्रदान कर सकता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.01

श्री सत्य साईं (1926) के मूल्य परक शैक्षिक विचार

श्री सत्य साईं मानवीय क्रिया कलापों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार भागों में विभाजित करने के पक्ष में हैं । वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति का भी समर्थन करते थे। नारी शिक्षा के पोषक होने पर भी वे सह शिक्षा के विरोधी हैं। अन्य संत शिक्षा दार्शनिकों जैसे दयानन्द, विवेकानन्द और गाँधी के समान श्री सत्य साईं भी आत्म निर्भरता और आत्मानुभूति को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। महर्षि महेश योगी, टैगोर, मालवीय तथा राधाकृष्णन (सामाजिक–राजनैतिक शिक्षा दार्शनिक) के समान वे शिक्षा के सांस्कृतिक ध्येय पर बल देते हैं। दूसरी और वे सर सैयद अहमद खाँ के समान शिक्षा के अनुशासनात्मक प्रशिक्षण को भी महत्व देते हैं तथा धार्मिक शिक्षा को आवश्यक समझते हैं। उनके अनुसार अच्छी शिक्षा वही है जो नवयुवकों को राष्ट्रवादी बनाने के साथ साथ सच्चा मानव भी बनाए। श्री सत्य साईं के अनुसार अध्यापक को क्रियात्मक, आत्म विश्वासी, आदर्श और बौद्धिक होना चाहिए। अध्यापक को अपने शिष्यों से स्वार्थरहित प्रेमभाव के साथ उनका मित्रवत पथ–प्रदर्शन करना चाहिए । ये अध्यापक को सच्चे साधक के रूप में पवित्र आचरण, क्षमा और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति के रूप में देखना चाहते हैं। अध्यापक वस्तुतः प्रकाश स्तंभ है।

जहाँ तक शिक्षार्थी का प्रश्न है, श्री सत्य साईं उनमें सम्पूर्ण मानसिक पवित्रता देखना चाहते हैं। वे छात्रों में विचार को ही नहीं, अनुभूति को भी महत्व देते हैं। छात्रों में आत्म नियंत्रण, निःस्वार्थता तथा आत्म–विश्वास के साथ–साथ चरित्रबल तथा देशभक्ति को भी आवश्यक मानते हैं।

पाठ्यक्रम के अन्तर्गत श्री सत्य साईं ने कला, विज्ञान और सामाजिक विषयों के साथ–साथ वाणिज्य के अध्ययन को भी आवश्यक माना है। कला विषयों के अन्तर्गत वे भारतीय संस्कृति, इतिहास, भाषाशास्त्र, समाजाास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र का अध्यापन मानते हैं। विज्ञान के विषयों में वे भौतिकी, रसायन–शास्त्र और गणित पर बल देते हैं। श्री सत्य साईं ने शिशुओं के विकास के लिए ''बाल विकास विद्यालय'' किशोर छात्रों के लिए ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालय'' तथा तरुणों के लिए भी महाविद्यालय की परिकल्पना की।श्री सत्य साईं शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक, छात्र, पाठ्यक्रम और विद्यालय सभी को गुरुकुल के वातावरण में अनुरंजित देखना चाहते हैं। श्री सत्य साईं अपने शिक्षा दर्शन में जितने आदर्शवादी हैं उतने ही प्रयोजनवादी भी हैं।

श्री सत्य साईं गुरुकुल शिक्षा पद्धति के समर्थक है । वे शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मानुभूति तथा आत्मनिर्भरता की प्राप्ति को मानते हैं। वे शिक्षा के सांस्कृतिक लक्ष्य को मानते हैं। साथ ही वे अनुशासनात्मक प्रशिक्षण पर भी बल देते हैं तथा धार्मिक शिक्षा को आवश्यक मानते हैं उनके अनुसार, जो शिक्षा नवयुवकों को राष्ट्रवादी बनाने के साथ– साथ सच्चा मानव बनाये, वही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा आत्मानुभूति, आत्मविश्वास, आत्म संतोष, आत्म बलिदान तथा आत्म ज्ञान के सर्वोपरि उद्देश्यों को प्राप्त कराने वाली होनी चाहिये, साथ ही भारतीय संस्कृति परम्परा पर आधारित होनी चाहिये।

श्री सत्य साईं का मत है कि चरित्र निर्माण षिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है । चरित्र के बिना शिक्षा न केवल व्यर्थ है बल्कि निश्चित रूप से खतरनाक है। अतः चरित्र की खोज को बुद्धि से भी अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अनुशासन का पालन करना सिखाना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये। शिक्षा की सफलता के लिए अनुशासन अति आवश्यक है। शिक्षार्थी जीवन सच्चे अर्थो में जीने

योग्य तभी होता है, जब कोई अपने अन्दर अनुशासित स्वभाव, मन की एकाग्रता एवं आत्मा (स्व) में आस्था उत्पन्न करता है तथा भोगासक्त आनन्द का परित्याग करता है।

श्री सत्य साईं नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल देते हैं। उनके मतानुसार, 'आधयात्मिकता' समाज का मेरू–दण्ड हैं और सामाजिक प्रगति तथा सुदृढता के लिये अपरिहार्य है। अतः शिक्षा को इसे प्राप्त करने में अवश्य ही मद्द करनी चाहिये। शिक्षा के चार मुख्य उद्देश्य हैं – ज्ञान की प्राप्ति, कौशल की प्राप्ति, संतुलन की प्राप्ति एवं अंतरदृष्टि की प्राप्ति। उनका मत है कि ज्ञान सभी के द्वारा इन्द्रियों एवं अनुमितियों के माध्यम से प्राप्त किया जा रहा है। हमें ज्ञान का रूपान्तर कौशल के रूप में करना है।

शिक्षा के उद्देश्य में निश्चित ही आत्म–ज्ञान, चरित्र, अनुशासन, संस्कृति, धर्म, आध्यात्मिक ज्ञान एवं मोक्ष होने चाहिये तथा इन सब की प्राप्ति गुरूकुल वातावरण में होनी चाहिये। उनके अनुसार नारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो उन्हें आदर्श माँ बना सके। श्री सत्य साईं कालातीत भारतीय शिक्षा की आलोचना करते हैं परन्तु साथ–साथ स्थिरतापूर्वक एवं निरन्तर इसके पुनर्जागरण के लिये प्रयास करने पर बल देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा में विवादों तथा मतभेदों से बचने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षा का कार्य मानवीय क्रिया कलापों के चारों भागों – धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति में सहायता करना है। अतः शिक्षा भारतीय विषमताओं को ध्यान में रखकर दी जानी चाहिये, जिससे भारत का युवा वर्ग केवल राष्ट्र के सदस्य के रूप में ही नही बल्कि सच्चे मानव के रूप में जीवनयापन कर सके।

श्री सत्य साईं के अनुसार शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि आदर्श चरित्र वाला मार्गदर्शक होना चाहिए। वे शिक्षक को 'राष्ट्र निर्माता' मानते थे। उनका कथन था कि शिक्षक का आचरण ही छात्रों के व्यक्तित्व को आकार देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षक की गुणवत्ता, प्रशिक्षण और नैतिक भूमिका पर विशेष बल देती है। नीति शिक्षक को प्रेरक, मार्गदर्शक और मूल्य–वाहक के रूप में देखती है, जो साईं दर्शन के अनुरूप है।

श्री सत्य साईं पश्चिमी शिक्षा के आलोचक हैं। उनके अनुसार इसका परिणाम घरेलू आनन्द की विलुप्तता एवं आर्य धर्म के सिद्धान्तों के क्षय के रूप में सामने आया है। विद्यार्थियों को यह अवश्य अनुभव करना चाहिए कि पश्चिमी संस्कृति एवं शिक्षा से उनकी नैतिक शक्ति का ह्रास हो रहा हैं पश्चिमी सभ्यता का परिणाम दरिद्रता एवं दुःख होता है क्योंकि यह महानगरों की सभ्यता है जहाँ व्यक्तिगत इच्छाओं की विविधता है। श्री सत्य साईं संस्कृत एवं मातृभाषा के अध्ययन के महत्व का समर्थन करते हैं। शिक्षार्थी को मन के शुद्धिकरण पर बल देना चाहिए। उसमें विवेकपूर्ण विचार करने तथा घटनाओं के मध्य तर्क खोजने की योग्यता होनी चाहिए। उसे सदैव इस बात का विश्लेषण करना चाहिए कि वह क्या करता है और क्यों करता है।

बाल दिवस विद्यालय, हायर सैकेन्ड्री स्कूल तथा महाविद्यालयों का लक्ष्य है व्यक्तित्व का विकास। श्री सत्य साईं के शिक्षा प्रबन्ध में बाल विकास विद्यालय, हायर सेकेन्ड्री स्कूल तथा महिला विद्यालय एवं विश्वविद्यालय शामिल हैं। अन्य संस्थायें यदि अपने को इनसे जोड़ने को इच्छुक हैं तो जोड़ सकती है। प्रार्थना, अनुशासन, गुणवत्ता तथा अधिकाधिक को शिक्षित करने पर वह बल देते हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये कक्षा में बच्चों की भीड़ नहीं होनी चाहिये। माता–पिता से लगातार सम्पर्क रहे, इस बात पर उनका बल है।

संक्रमण नियम – वे छात्र जो पाँच वर्ष अध्ययन हेतु प्रवेश लेते हैं किन्तु तीन वर्ष बाद छोड़ने को मजबूर हो जाते हैं उन्हें स्नातक की डिग्री दी जाती है। इसका आधार उनका परीक्षाफल होता है। कम से कम उन्होंने उत्तीर्ण श्रेणी प्राप्त की हो ।

प्रशान्त निलियम परिसर – यह उच्च शिक्षा का केन्द्र है। अन्य बातों के साथ–साथ यहां भजन, नैतिक शिक्षा, दैनिक व्यवहार तथा अनुशासन पर बल दिया जाता है। 15 छात्रों के लिये एक परामर्शदाता होता है जो सेमेस्टर के कार्य के आधार पर ग्रेड अर्थात् श्रेणी प्रदान करता है।

श्री सत्य साईं के अनुसार मानव जीवन के पाँच मूल मूल्य – सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा– शिक्षा की आधारशिला होने चाहिए। उनका मानना था कि यदि शिक्षा इन मूल्यों को विकसित नहीं करती, तो वह अधूरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी मूल्य–आधारित शिक्षा पर बल देती है। नीति में नैतिकता, संवैधानिक मूल्य, सहानुभूति, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। इस प्रकार श्री सत्य साईं की मूल्य शिक्षा की अवधारणा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नैतिक लक्ष्यों से पूर्णतः सामंजस्य रखती है।

श्री सत्य साईं शिक्षा को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास की समन्वित प्रक्रिया मानते थे। उनका दृष्टिकोण (Head, Heart and Hand) के संतुलन पर आधारित था, जिसमें ज्ञान, भावना और कर्म का सामंजस्य आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी सर्वांगीण विकास को शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य माना गया है। बहु–विषयक शिक्षा, कला और खेलों का समावेश, जीवन कौशल का विकास – ये सभी तत्व साईं शिक्षा दर्शन से मेल खाते हैं।

श्री सत्य साईं के मूल्य परक शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास या रोजगार की प्राप्ति तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास का भी आधार है। भारतीय शिक्षा परंपरा में मूल्यपरक शिक्षा को सदैव केंद्रीय स्थान प्राप्त रहा है, जहाँ शिक्षा को जीवन–मूल्यों के संवर्धन का माध्यम माना गया। आधुनिक समय में तकनीकी प्रगति और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के कारण शिक्षा में मूल्यों का क्षरण एक गंभीर चुनौती बन गया है। ऐसे संदर्भ में श्री सत्य साईं के मूल्यपरक शिक्षा संबंधी विचार तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही शिक्षा को पुनः नैतिक और मानवीय आधार प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

श्री सत्य साईं का शैक्षिक दर्शन मूलतः मानव–मूल्यों पर आधारित है। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को अच्छा इंसान बनाए। उन्होंने मानव जीवन के पाँच सार्वभौमिक मूल्यों – सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा – को शिक्षा की आधारशिला माना। साईं बाबा का विश्वास था कि यदि शिक्षा इन मूल्यों को विकसित नहीं करती, तो वह समाज में असंतुलन, हिंसा और नैतिक पतन को जन्म दे सकती है। इस दृष्टि से मूल्यपरक शिक्षा उनके संपूर्ण शैक्षिक दर्शन का केंद्रीय तत्व है।

श्री सत्य साईं ने (Educare) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका आशय है – मनुष्य के भीतर निहित श्रेष्ठ मानवीय गुणों को बाहर लाना। उनके अनुसार मूल्य कोई बाहरी तत्व नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्ति की अंतर्निहित चेतना का हिस्सा हैं। शिक्षा का कार्य इन्हें जागृत करना है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल सूचना और तथ्यों तक सीमित न रखकर चरित्र निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा के इसी मूल्यपरक स्वरूप को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता, संवैधानिक मूल्य, सहानुभूति, करुणा, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक दर्शन, योग और ध्यान को शिक्षा प्रणाली में समाहित करने पर बल देती है, ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण और संतुलित विकास हो सके। इस प्रकार, नीति का मूल्यपरक दृष्टिकोण श्री सत्य साईं के विचारों से गहराई से मेल खाता है।

शिक्षक की भूमिका के संदर्भ में भी श्री सत्य साईं के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे शिक्षक को केवल विषयवस्तु का ज्ञाता नहीं, बल्कि मूल्यों का जीवंत उदाहरण मानते थे। उनके अनुसार शिक्षक का आचरण, विचार और जीवन–शैली विद्यार्थियों के चरित्र पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। यदि शिक्षक स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करता है, तो विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से उन्हें आत्मसात करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षक को प्रेरक, मार्गदर्शक और मूल्य–वाहक के रूप में देखती है तथा शिक्षक प्रशिक्षण में नैतिक और व्यावसायिक विकास पर विशेष बल देती है।

सेवा–भाव श्री सत्य साईं की मूल्यपरक शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है। उन्होंने षिक्षा को सेवा से जोड़ते हुए कहा कि 'सेवा के बिना शिक्षा अधूरी है'। उनके अनुसार विद्यार्थियों को समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें सेवा के माध्यम से मूल्यों का व्यवहारिक अनुभव कराना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक अधिगम, सामुदायिक सहभागिता और सामाजिक परियोजनाओं को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है, जो साईं शिक्षा दर्शन के व्यावहारिक पक्ष को सुदृढ़ करता है।

श्री सत्य साईं के अनुसार मूल्यपरक शिक्षा व्यक्ति को केवल नैतिक नहीं, बल्कि आत्म–संयमी और शांति–प्रिय भी बनाती है। उन्होंने आध्यात्मिकता को संकीर्ण धार्मिक अर्थों से ऊपर उठाकर सार्वभौमिक मानवीय चेतना के रूप में प्रस्तुत किया। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में सहिष्णुता, आपसी सम्मान और वैश्विक भाईचारे की भावना को विकसित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन और नैतिक दृढ़ता पर बल देती है, जो इस आध्यात्मिक दृष्टिकोण से साम्य रखता है।

समग्र रूप से विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि श्री सत्य साईं के मूल्यपरक शिक्षा संबंधी विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के साथ गहरा वैचारिक सामंजस्य रखते हैं। जहाँ नीति शिक्षा व्यवस्था को संरचनात्मक और पाठ्यक्रमगत सुधार प्रदान करती है, वहीं साईं बाबा का शिक्षा दर्शन उसे नैतिक और मानवीय दिशा देता है। यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में श्री सत्य साईं के मूल्यपरक शिक्षा सिद्धांतों को आत्मसात किया जाए, तो भारतीय शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान और कौशल से युक्त, बल्कि चरित्र–सम्पन्न और समाजोन्मुख नागरिकों के निर्माण में सक्षम हो सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल दर्शन से गहन रूप से सामंजस्य रखते

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.01

हैं। यद्यपि श्री सत्य साईं के विचारों का प्रतिपादन नीति–निर्माण के उद्देश्य से नहीं किया गया था, फिर भी उनकी शिक्षा–दृष्टि आधुनिक भारतीय शिक्षा सुधारों के लिए वैचारिक आधार प्रदान करती है। उनके द्वारा प्रतिपादित मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षा आज की मूल्य–संकटग्रस्त शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए केवल सैद्धांतिक समानता ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक दिशा भी प्रदान करते हैं। यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में सत्य साईं द्वारा प्रतिपादित मूल्य–आधारित शिक्षा, सेवा–भाव और चरित्र निर्माण के तत्वों को प्रभावी रूप से समाहित किया जाए, तो भारतीय शिक्षा प्रणाली अधिक मानवीय, नैतिक और समाजोपयोगी बन सकती है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि श्री सत्य साईं के शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – दोनों का लक्ष्य एक ही है – ज्ञान, कौशल और मूल्यों से युक्त ऐसे नागरिकों का निर्माण जो आत्मिक रूप से जागरूक, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और राष्ट्रीय विकास के प्रति प्रतिबद्ध हों। इस दृष्टि से श्री सत्य साईं के विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि उसके सफल एवं सार्थक क्रियान्वयन के लिए प्रेरणास्रोत भी सिद्ध होते हैं।

संदर्भ

1. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय.
2. कुमार, अरविंद. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय परंपरा. ज्ञानदीप प्रकाशन.
3. मिश्रा, एस. एन. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – एक समीक्षात्मक अध्ययन. अटल पब्लिकेशन्स.
4. एनसीईआरटी. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में पाठ्यचर्या ढाँचा. एनसीईआरटी.
5. एनसीईआरटी. (2022). समग्र एवं बहुविषयी शिक्षा हेतु दिशा–निर्देश. एनसीईआरटी.
6. पांडेय, रामशकल. (2019). मूल्य शिक्षा – अवधारणा एवं व्यवहार. चौखम्बा ओरिएंटालिया.
7. पाठक, आर. पी. (2018). शिक्षा के दार्शनिक आधार. पियरसन इंडिया.
8. राव, वी. के. (2019). शिक्षा और मानवीय मूल्य. एलाइड पब्लिशर्स.
9. सक्सेना, रीना. (2019). समग्र शिक्षा की भारतीय अवधारणा. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
10. सिंह, उदयवीर. (2020). शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. राज पब्लिकेशन्स.
11. श्री सत्य साईं सेवा संगठन. (2017). एजुकेयर फॉर लाइफ. प्राशांति निलयम.
12. श्री सत्य साईं वर्ल्ड फाउंडेशन. (2020). मानवीय मूल्य और वैश्विक शिक्षा. एसएसआईओ पब्लिकेशन्स.
13. श्री सत्य साईं. (2005). चरित्र निर्माण हेतु शिक्षा. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.
14. श्री सत्य साईं. (2007). मानवता का मानवीकरण ही शिक्षा. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.

15. श्री सत्य साईं. (2008). शिक्षा का उद्देश्य. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.
16. श्री सत्य साईं. (2009). शिक्षा में मूल्य. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.
17. श्री सत्य साईं. (2010). शिक्षा, मूल्य एवं आध्यात्मिकता. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.
18. श्री सत्य साईं. (2012). एजुकेयर – शिक्षा का हृदय. श्री सत्य साईं बुक्स एंड पब्लिकेशन्स ट्रस्ट.
19. श्री सत्य साईं सेंट्रल ट्रस्ट. (2015). शिक्षा में मानवीय मूल्य. प्राशांति निलयम.
20. श्री सत्य साईं उच्च शिक्षा संस्थान. (2018). आदर्श शिक्षक की भूमिका. प्राशांति निलयम.
21. श्री सत्य साईं उच्च शिक्षा संस्थान. (2019). एजुकेयर –समग्र शिक्षा मॉडल. प्राशांति निलयम.
22. शुक्ल, सुमन. (2018). भारतीय दर्शन एवं मूल्यपरक शिक्षा. लोकभारती प्रकाशन.
23. सिंह, राजकुमार. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ. प्रभात प्रकाशन.
24. वर्मा, के. के. (2021). समग्र शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. राधा पब्लिकेशन्स.
25. वर्मा, नीरज. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मूल्य शिक्षा. यूनिवर्सल बुक्स.
26. यादव, बी. एल. (2021). भारतीय शिक्षा नीति – सिद्धांत और व्यवहार. नवभारत प्रकाशन